SHRI MOINUL HAQUE CHOUDHURY : There is no basis for the statement of the hon. Member that any favour is being shown to this firm for one reason or the other about which he has mentioned because the reasons themselves have no foundation.

Secondly, I can again assure the House that as soon as the policy decision is taken, action would be taken as and when it is called for in individual cases.

MR. DEPUTY CHAIRMAN : Yes, Mr. Mohta.

SHRI M. K. MOHTA : Sir, the hon. Minister has said that expansion has taken place in respect of this factory. At the same time he said that no capital equipment was involved. Docs it mean that there has been only an increase in production, but no actual, physical expansion of the factory ? Will he please clarify the position ?

. SHRI MOINUL HAQUE CHOUDHURY : By the use of some indigenous machinery and also by improved technology, according to them, increase has taken place.

PERSONAL EXPLANATION BY SHRI RAJNARAIN *RE*. HIS DECLARATION TO GO ON HUNGER STRIKE FROM THE 9TH AUGUST, 1971 ON THE ISSUE OF RECOGNITION OF BANGLA DESH

THE MINISTER OF STATE IN THE DEPARTMENT OF PARLIAMENTARY AFFAIRS (संसदीय कार्य विभाग में राज्य मन्त्री (SHRI OM MEHTA) : Sardar Swaran Singh is here.

श्री राजनारायण (उत्तर प्रदेश) : श्रीमन्, मुझे आज्ञा मिल चुकी है ।

श्री उपसभापति : राजनारायण जी, यह हो जाने दीजिये ।

श्री राजनारायण : आप अपने वचन का पालन करें । प्रश्नों के बाद आप ने कहा था कि हमको सफाई का मौका मिलेगा । तो मैं आप से प्रार्थना करता हूं कि आप हमको मौका दीजिए । हमारी बात दो तीन मिनट में खत्म हो जायगी ।

श्री उपसभापति : दो तीन मिनट में ही यह हो जायगा ।

श्री राजनारायण : दूसरों के लिए आप जो लागू करते है वह हमारे लिए क्यों नहीं होता ? कालिंग अटेंशन के पहले क्या किसी ने पूछा नहीं है ?

SHRI SITARAM KESRI (Bihar) : After the statement of the Minister, he may be allowed...

(Interruptions)

MR. DEPUTY CHAIRMAN : Order, order please.

श्री राजनारायण : तो क्या आप श्री ओम् मेहता की बात को सुन कर ही व्यवस्था देंगे ? (*Interruption.*) आप इसके पहले कह चुके थे कि प्रश्न हो जाने दीजिए । अब प्रश्न समाप्त हो गये इसलिए हमको दो तीन मिनट का समय दीजिए ताकि मैं अपनी बात खत्म कर लूं ।

(*Interruption*)

श्री पीताम्बर दास (उत्तर प्रदेश) : बाद में कोई दिक्कत न आये इसलिये पहले ही मैं एक बात निवेदन कर देना चाहता हूं । राजनारायण जी जो भी अपना एक्सप्लेनेशन देंगे उस पर मुझे एक प्रश्न पूछने का अधिकार रहेगा । फिर यदि आप कहें कि एक मिनट में इसको निपटा दिया जाय, तो संभव नहीं रहेगा ।

श्री उपसभापति : राजनारायण जी, इस सदन में हमेशा जो फार्मल बिजनेस होता है उसके बाद अगर कोई मेम्बर अपना एक्सप्लेनेशन देना चाहता है तो उसको मौका मिलता है । लेकिन आपने कहा था कि आपको कोई आवश्यक काम करने के लिए बाहर जाना है और इसलिए आप को अपनी बात कहने के लिए एक मिनट चाहिए तो मैं विदाउट मेकिंग ऐनी प्रिसीडेंट, यह

एक्सेप्शन माना जायगा, आपको अपनी बात कहने के लिए एक मिनट का मौका दे रहा हूं। यह मत समझिये कि चूंकि आपको आज मौका मिल रहा है इसलिए इसी तरह अन्य सदस्यों को मौका मिलेगा या आपको भी आगे इस तरह का मौका मिलेगा कि काल अटेंशन खत्म होने के पहले आपको या किसी को मौका मिला करेगा।

श्री पीताम्बर दास : एक मिनट मुझे प्रश्न करने का मौका मिलेगा ?

श्री उपसभापति : जी हां।

श्री राजनारायण : मैं भी अर्जुन अरोड़ा और श्री कृष्ण कान्त का बहुत अनुगृहीत हूं कि उन्होंने हमारी भावनाओं का आदर किया और इस सदन में हमने जो घोषणा की थी कि 9 तारीख से बंगला देश की मान्यता के सवाल को लेकर हम भूख हड़ताल पर जायेंगे उसके बारे में उन्होंने हम से सफाई चाही। (*Interruption*) श्रीमन्, इस संबंध में मैं सदन के सम्मानित सदस्यों से निवेदन करना चाहता हूं और उनको जानकारी देना चाहता हूं कि कल जो पी० टी० आई० द्वारा प्रसारित समाचार था वह बिल्कुल भ्रामक था। मैंने परसों कभी नहीं कहा था कि हम भूख हड़ताल 9 खारीख से नहीं करेंगे। मगर आज मैं कह रहा हूं, आदरणीय जयप्रकाश जी से जो मेरी बात हुई, उनकी बंगला देश को मान्यता दिये जाने की प्रबल भावना को देखते हुए और उनकी इच्छा बंगला देश को मान्यता दिलाने के जन संघर्ष को तीव्र करने के लिए यह है कि मैं भूख हड़ताल पर न बैठूं (*Interruption*) उसी के साथ साथ श्री सतीशकुमार अग्रवाल समाजवादी युवजन सभा ने हमको यह आश्वासन दिया है कि बंगला देश को मान्यता दिलाने के लिए वे संघर्ष करने का वचन देते हैं और कहते हैं कि समाजवादी युवजन सभा के संघर्ष और व्यापक जन उठान के लिए आप संघर्ष न करें। श्रीमन्, उसी के साथ साथ...

श्री पीताम्बर दास : श्रीमन्, मुझे एक बात पूछनी है।

श्री राजनारायण : श्रीमन्, उसी के साथ साथ श्री कर्पूरी ठाकुर, श्री राम सेवक यादव, नाना साहिब गोरे, भूपेश गुप्ता, जनसंघ नेता, स्वतंत्र पार्टी के नेता और बंगला-देश-मान्यता-दो सम्मेलन के सभी सदस्यों ने...

श्री उपसभापति : आप बैठिये। श्री पीताम्बर दास।

श्री राजनारायण : जरा सुन लीजिये। इन सब ने विश्वास दिलाया है। उन्होंने कहा है कि 9 अगस्त से मान्यता दिलाने के लिए, उस प्रश्न को लेकर, जो अनशन करने का निश्चय किया था वह न करें और उन्होंने कहा है कि बंगला देश को मान्यता दिलाने के लिये सभी सम्भव प्रयास करने का संकल्प करते हैं और इसलिये प्रस्तावित अनशन के निर्णय को छोड़ दो और हम विश्वास दिलाते हैं कि बंगला देश को मान्यता दिलाने के लिये उसी तीव्रता और मुस्तैदी से काम करेंगे जिस तरीके से वह करना चाहते हैं। यह श्री कर्पूरी ठाकुर, श्री राम सेवक यादव, नाना साहिब गोरे का हमको लिखित आश्वासन है। तो हमारा अनशन करने का जो मकसद है वह मकसद हमारा करीब-करीब तीन चौथाई पूरा हो रहा है।

श्री उपसभापति : राजनारायण जी, अब आप बैठिये।

श्री राजनारायण : अब मैं इतना कहना चाहता हूं कि आज फिलहाल आज के अनशन करने के निर्णय को स्थगित कर रहा हूं।

श्री उपसभापति : श्री पीताम्बर दास।

श्री राजनारायण : सुनिये। 14 अगस्त, 12 बजे रात से लेकर एक निश्चित, फिक्स्ड 24 घंटे का मैं अनशन करूंगा। 14 तारीख को। क्योंकि 15 तारीख को वह दिन, 15 अगस्त को वह दिन रहा है जब कि मुल्क का बटवारा कराया गया और उससे बंगला देश की आज यह स्थिति हुई।

श्री उपसभापति : प्लीस सिट डाउन, बहुत हो गया। आपने कहा एक मिनट और तीन चार मिनट ले लिया।

श्री राजनारायण : हमने एक मिनट नहीं पांच सात मिनट कहा ।

श्री उपसभापति : आप बैठिये ।

श्री पीताम्बर दास : मैं तो, श्रीमन्, इतनी बात जानता हूं कि इस अफवाह में कहां तक सच्चाई है कि....

श्री राजनारायण : श्रीमन् ! जरा सुना जाय । मैं कह रहा हूं...

श्री पीताम्बर दास : मुझे थोड़ा सा कह लेने दीजिये । मैं जानना चाहता हूं कि इस अफवाह में कहां तक सच्चाई है कि इस हाउस के एक उच्च पदाधिकारी के कमरे को राजनारायण जी ने अपने अनशन के लिये मांगा था कि उनको वहां रात को रहने की इजाजत दी जाय ।...

श्री राजनारायण : मैं बताता हूं ।

श्री पीताम्बर दास : तो उन्होंने यह कहा कि रात को रहने की इजाजत की बात पर तो हम विचार कर सकते है लेकिन आपकी सुविधा वगैरह की देख रेख के लिये हम कोई व्यवस्था नहीं कर सकते । अगर आप अपने घर से किसी को ले आओ रात की सुविधा के लिये तो हम सोच सकते हैं ।

श्री अर्जुन अरोड़ा (उत्तर प्रदेश) : क्या अनशन के दिन में भी रात की सुविधा की जरूरत पड़ती है ?

श्री उपसभापति : कालिंग अटेंशन ।

श्री राजनारायण : पीताम्बर दास जी का हमको जवाब देना है ।

श्री उपसभापति : आप बैठिये ।

श्री राजनारायण : अगर आप हल्ला करेंगे तो कोई कार्यवाही आगे नहीं चलेगी । अगर संसदीय बदतमीजी के जरिये अब हमको आगे रोका गया तो हम किसी कार्यवाही को आगे चलने से रोकने के लिये अपनी ताकत का इस्तेमाल करेंगे ।

एक माननीय सदस्य : बैठो, बैठो ।

श्री राजनारायण : बैठो, बैठो क्या । हमने बंगला देश के लिये आज अपना अनशन स्थगित किया है मगर इस सदन में बंगला देश को मान्यता दिलाने के लिये संघर्ष करना नहीं त्याग दिया है । अब हमारा संघर्ष शुरू हो जायगा । संसदीय बदतमीजी नहीं चलेगी । श्रीमन्, आप देख रहे हैं कि एक दो आदमी कितनी संसदीय बदतमीजी कर रहे हैं । श्रीमन्, श्री पीताम्बर दास जी ने जो बात कही उसके बारे में निवेदन करना चाहता हूँ ।

श्री कल्याण चन्द (उत्तर प्रदेश) : प्वाईंट आफ आर्डर ।

श्री उपसभापति : जरा एक मिनट आप रुकिये ।

श्री राजनारायण : श्रीमन्, हमने सदर श्री गोपाल स्वरूप पाठक को एक बात सचिव के द्वारा कहलवाई थी कि 9 अगस्त को अगर मैं अनशन करूंगा तो मैं सदन को छोड़ूंगा नहीं ।

श्री पीताम्बर दास : मेरा प्रश्न तो अधूरा ही रह गया ।

श्री राजनारायण : सुनिये । हमने कहलवाया कि हम सदन में रहेंगे ।

श्री पीताम्बर दास : मैं प्रश्न तो पूरा कर लूं ।

श्री राजनारायण : सुना जाय ।... हमने कहा कि हम सदन में रहेंगे या चाहे हम चेयरमैन के कमरे में बैठें, अगर हम इस घेरे में रहेंगे, आप इस बात को सूचित कर दीजिये । हमको सचिव ने कहा, राजनारायण बाबू, सदन के चेयरमैन के कमरे या हमारे कमरे में बैठने की कोई प्रथा नहीं है, छः बजे कार्यवाही बन्द हो जाती है, 6 बजे के बाद इस बिल्डिंग में कोई रहता नहीं । हमने

कहा, रहे या न रहे, हमारा यह फैसला है कि अगर मैं 9 तारीख से अनशन पर बैठता हूं तो इसी सदन में, इसी सभा में, या इसी जगह या चेयरमैन के कमरे में बैठूं क्योंकि बंगला देश का सवाल कोई मामूली सवाल नहीं है क्योंकि जितना मान्यना देने में विलम्ब होता है उससे जो सड़ांध, दुर्गन्ध, पैदा हो रही है उसके दौरान आज हमारा यह कर्तव्य है एक क्रान्तिकारी पुरुष के नाते तो यह हमको टुच्चापन सिखाया जाता है। देखिए क्या हो रहा है –दिल्ली में यहां हजारों हजार आदमी आए हैं, किसी के मुंह से आवाज नहीं आती है। अगर इतने प्रदर्शनकारी हमारी तरफ से आए होते तो सारी दिल्ली गूंज उठती। पता नहीं कहां कहां से पकड़ कर लोगों को ले आए हैं।

(*Interruptions*)

श्री उपसभापति : बैठ जाइए राजनारायण जी। प्लीस सिट डाऊन।

MR. DEPUTY CHAIRMAN : Mr. Swaran Singh, do you want to make a Statement ? This Statement should follow only after the Calling Attention. That has been the practice.

श्री राजनारायण : उनका स्टेटमेंट पहले हो रहा है या कालिंग अटेन्शन की बात हो रही है ?

श्री उपसभापति : वही मैं कह रहा हूं, कालिंग अटेन्शन पहले होना चाहिए।

SHRI A. G. KULKARNI (Maharashtra) : Sir, you allow his useless talk to go on and not this Statement to be made. It is important for our country-SHRI PITAMBER DAS

: मुझे एक बात निवेदन करनी है कि जो पर्चा हमारे पास आया है उसमें जो कुछ लिखा है उससे केवल यही मालूम होता है कि

There is some sort of an important announcement which the Government wants to make. I think any announcement of •<hat type can ben be made at any time.

SHRI BHUPESH GUPTA (West Bengal) : Let it be made.

श्री राजनारायण : मेरा एक प्रश्न है। अगर पीताम्बर दास जी की बात आप मान लेते हैं, तो मैं निवेदन करता हूं कि उससे जानकारी हासिल करने के लिए हम सवाल भी पूछ सकते हैं।

श्री उपसभापति : ठीक है, बैठिए....

As it is the desire of the House that the hon. Minister should make a Statement before the **Calling** Attention, I am allowing the hon. Minister to make the Statement.

SHRI BHUPESH GUPTA: I concede St. He should make it now.

STATEMENT BY THE MINISTER OF EXTERNAL AFFAIRS *RE* THE INDO-SOVIET TREATY OF PEACE, FRIENDSHIP AND COOPERATION

THE MINISTER OF EXTERNAL AF-FAIRS/falw H^fr (SARDAR SWARAN SINGH) : Sir, I have the honour to lay on the Table of the House a copy of the Treaty of Peace, Friendship and Co-operalion, signed to-day by me on behalf of the Government of India with Mr. A. A. Gromyko, Foreign Minister of the USSR Government, who has signed it on behalf of the Union of Soviet Socialist Republics.

Government welcome this Treaty as a further step towards strengthening friendship and co-operation between India and the Soviet Union. The Treaty will, we are convinced, provide a stablilising factor in favour of peace, security and development not on'y of our two countries, but the region as a whole. It is not aimed against any third country. In fact, we hppe that this Treaty will provide a pattern for similar treaties between India and other countries in this region. Such treaties between countries of this region would stabilise peace and strengthen their independence and sovereignty.

I should like to emphasise in particular that this Treaty is, in its true sense, a Treaty of peace. It strengthens our policy of non-alignment, respect for which is expressly mentioned in the Treaty. We sincerely hope that the policy of non-alignment will be further strengthened and will become an effective instru-